अथ सप्तदशोऽध्याय:

सत्रमाँ तीन तह्नाँ की सर्धा अद्धयाय

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य, यजन्ते श्रद्धयाऽन्विता:।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण, सत्त्वमाहो रजस्तम:।।१

अर्जन बोल्ल्या

(सिरफ स्रधालू का के होगा?)

जो सास्त्रबिधी तैं ऊप्पर जा, पूज्जै देवाँ नै सर्धा तैं।
उन की स्थिति, किन्तू, के किरसण, सत या रज या तम सै बणदी?।। १

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा, देहिनां सा स्वभावजा।
सात्त्विकी राजसी चैव, तामसी चेति तां शृणु।। २

स्रीभगुवान् बोल्ले

(सर्धा हो सै तीन तह्नाँ की)

तीन तह्नाँ की हो सै सर्धा, देहधारियाँ की वा अर्जन।
आप्णै होणै कै सँग मैं सै, सुभाव बण कैं जनम लहै सै।
सतोगुणी या रजोगुणी अर, तमोगुणी सै, उस नै सुण तैं॥ २

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य, श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो, यो यच्छ्रद्धः स एव स:।।३

(सर्धा का महत्त्व)

'सत्त्व' मनुख की बुद्धी हो सै, आच्छे माड़े ओर बीच के।
परकास मोह किरिया के या, संस्कार धरै सब कै सर्धा।।
सुभा जिसा हो उस तह्नियाँ की, सब की सर्धा हो सै भारत।
भरत बंस मैं जाए अर्जन, सर्धा माणस मैं खूब घणी सै।।

या ए इस का भाव बणावै, न्यूँ सर्धा-माफिक पुरुस बणै सै।
सर्धा जिसी मनुख मैं हो सै, वो ए वो माणस बण ज्या सै॥ ३

यजन्ते सात्त्विका देवान्, यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये, यजन्ते तामसा जनाः।।४

(तीन तह्वाँ की सर्धा के देवते)

[१]पूज्जैँ सात्त्विक सर्धा आळे, देवाँ नै, [२]यक्स-राच्छसाँ नै।
राजस सर्धा आळे पूज्जैँ, [३]प्रेत्ताँ भूत्ताँ नै अर कोए।
पूज्जैँ तामस सर्धा आळे॥ ४

अशास्त्रविहितं घोरं, तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः, कामरागबलान्विताः।।५

(आसुरी प्रव्रित्ति आळे माणस)

सास्तर मैँ नाँ कह्या, बताया, करणै खात्तर कर्म मनुख नै।
तन नै मन नै कस्ट देण की, करदे जो जन उग्र तपस्या।।
'मैँ' का करदे ढोँग दिखावा, लोग्गाँ नै वैँ मोहण खात्तर।
तामस सर्धा आळ्याँ का अर, होवै अर्जन, करम दिखावा।।
'घणा तपस्वी मैँ सूँ, सै नाँ, मेरे बरगा ओर तपस्वी'।
इस घमण्ड तैँ सैँ वैँ पूरण, इच्छा उन की बड़े फळाँ की।
दुनिया मैँ तैँ पाणै की सै, बिसै भोग मैँ राग जोर का॥ ५

कर्शयन्तः शरीरस्थं, भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तःशरीरस्थं, तान् विद्धयासुरनिश्चयान्।।६

माड़ा करदे अग्गयानी वैँ, तन मैँ रह चर्बी माँस बणे।
पृथ्वी जल आदी भूत्ताँ नै, अर काया कै अन्दर रहँदै।।
मन्नै बी वैँ कस्ट देणिये, उन की जाण आसुरी सर्धा।
काया इन्द्रीसुख मैँ रमड़े, लोग्गाँ की वा सर्धा हो सै॥ ६

आहारस्त्वपि सर्वस्य, त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं, तेषां भेदमिमं शृणु।।७

(खान-पान, यग्य, तप अर दान के भेद)

खान-पान बी तो सब नै ए, तीन तह्वाँ का हो सै प्यारा।
यग, पूजा तप अर देणा, ये बी तीन तह्वाँ के हौँ सै।
उन का फरक, सुणो यो अर्जन॥ ७

आयुः सत्त्वबलारोग्य-सुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या, आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।८

(तीन तह्वाँ का खाणाँ-पीणाँ)

[१]उमर'र [२]हिम्मत [३]ताकत [४]सेहत, [५]आनँद सुख अर [६]प्रेम बढान्दा।
[७]चिकणा ओर [८]रसीला [९]टिकदा, काया मैँ जो खाएँ पाच्छै।।
[१०]हिरदै नै मजबूत बणान्दा, [११]मन नै बी जो आच्छा लाग्गै।
खाणा-पीणा होवै सै यो, सतोगुणी नै प्यारा अर्जन॥ ८

कट्वम्ललवणात्युष्ण-तीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा, दुःखशोकामयप्रदाः।। ९

(रजोगुणी नै प्यारा खान-पान)

[१]कड़ुवे, [२]खाट्टे, [३]खारे, अर जो, भोत [४]गरम हौँ, गरमी करदे।
[५]भोत चर्चरे, [६]ल्हूक्खे, खा कैँ, [७]जळण पेट मैँ पैदा करदे।।
[८]दुख, [९]मिचळी, [१०]मन माड़ा करदे, खान-पान ये रजोगुणी नै।
प्यारे लाग्गैँ सारे अर्जन॥ ९

यातयामं गतरसं, पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं, भोजनं तामसप्रियम्।। १०

(तमोगुणी नै भाणियाँ खान-पान)

[१]कई पहर तैँ धर्‌या बणा कैँ, [२]बेरस, [३]बाँस मारदा, [४]बास्सी।

[५]झूट्ठा छोड्या अर [६]अपवित्तर, [७]यग पूजा मैं नाँ बरत्या जावै।।
बुद्धी नै बी ठस्स करै जो, खाणाँ-पीणाँ, तमोगुणी जो।
माणस, हो सै उस नै प्यारा॥ १०

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो, विधिदृष्टो य इज्यते।
यष्टव्यमेवेति मनः, समाधाय स सात्त्विकः।।११

(तीन तह्राँ का यग्ग्य)

[१]फळ की इच्छा जो नाँ राक्खैं, सास्त्रबिधी मैं देक्खी होई।
पूजा अर्चा यग्ग्य करैं सैं, 'करणा ए न्यूँ' मन नै समझा।
जो यग्ग्य कर्‌या जा सै, वो ए, 'सात्त्विक' सारा अर्जन, हो सै॥ ११

अभिसंधाय तु फलं, दम्भार्थमपि चैव यत्।
इज्यते भरतश्रेष्ठ, तं यज्ञं विद्धि राजसम्।।१२

(रजोगुणी यग्ग्य)

[२]मन मैं रख कैं, किन्तू, फळ नै, ढौंग दिखावा करणै खात्तर।
पूजा यग अर पाठ बन्दगी, करदे ओर करान्दे माणस।
भरत बंस मैं उत्तम अर्जन, पूजा बन्दन यग्ग्य समझ ले।
सारे ए तो वैं सैं राजस, रजोगुणी जन, राजस सर्धा।
साधन सामग्री सब राजस, राजस माणस ये सैं करदे॥ १२

विधिहीनमसृष्टान्नं, मन्त्रहीनमदक्षिणम्।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं, तामसं परिचक्षते।। १३

(तमोगुणी यग्ग्य)

[३]सास्त्रबिधी नै छोड करै जो, गुणी जण्याँ नै अर भूक्ख्याँ नै।
दाणा-पाणी जित नाँ देन्दे, मन्त्र सही अर सही ढङ्ग तैं।।
बोल्ले नाँ ज्याँ जिस मैं अर नाँ, उचित दच्छिणा अर मजदूरी।
मेहनत करद्याँ नै नाँ दी ज्या, सही समै पै सही ढङ्ग तैं।

सर्धा तैं जो कर्‌या नहीं ज्या, यग पूजा वा तामस कहँदे॥ १३

देवद्विजगुरुप्राज्ञ-पूजनं, शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च, शारीरं तप उच्यते।। १४

(तीन तह्राँ का तप)

[१]देवाँ ओर जनेऊधारी, बरण धरम का पाळण करदे।
तीन बरण मैं स्रेष्ठ बिप्र की, ग्यानदान तैं, नातै रिस्तै।।
बडे होण तैं मन अन्धेरा, दूर करैं जो, उन गरुआँ की।
बिद्या पाए समझदार की, पूजा आद्दर मान बन्दगी।।
[२]तन मन वाणी ब्योहाराँ का, सुच्चापण हो ओर [३]सरलता।
रहण-सहण अर ब्यौहाराँ मैं, सोच-समझ मैं रहे सादगी।।
करतब मैं सीद्धापण अर हो, [४]घर-ग्रिहस्थ मैं संयम रखणा।
[५]पीड़ा नाँ दे कदे किसै नै, तन का तप यो बोल्ल्या जा सै॥ १४

अनुद्वेगकरं वाक्यं, सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव, वाङ्मयं तप उच्यते।। १५

[१]खटकै नाँ वो बोल बोलणा, [२]सच्चा [३]प्यारा [४]हितकर बी जो।
[५]आप्णै कुल अर सम्प्रदाय मैं, ग्यानसाख जो चाल्ली आई।।
उस कै अर निज ग्यान ध्यान कै, ग्रन्थाँ नै नित फिर-फिर पढणा।
बाणी सुद्ध करणियाँ तप यो, बोल्ल्या जा सै ग्यान्नी जन मैं॥ १५

मनःप्रसादः सौम्यत्वं, मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्, तपो मानसमुच्यते।। १६

[१]मन का खुस अर निर्मल रहणा, [२]सान्त भाव अर [३]मोन साधणा।
मन तैं बी नाँ किमे सोचणा, [४]इन्द्रिय मन बुद्धी पर काब्बू।।
[५]ब्यौहाराँ मैं छळ नाँ करणा, बिचार सुद्ध बी आप्णे रखणा।
तप यो मन का बोल्ल्या जा सै॥ १६

श्रद्धया परया तप्तं, तपस्तत् त्रिविधं नरैः।

(तीन्नूँ तप सै तीन तह्राँ के)

सर्धा रख कैँ खूब घणी-सी, तन तैँ मन तैँ कस्ट सहण की।
करैँ तपस्या माणस वा सै, तीन तह्राँ की सत रज तम तैँ।।

अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः, सात्त्विकं परिचक्षते।।१७

[१]कारण किम्मे रख कैँ आच्छा, [२]गुण सुभाव तैँ हो कैँ प्रेरित।
[३]नाँ ए करदे फळ की इच्छा, [४]आप्णै मन नै काब्बू मैँ कर।
लाग्गे रह कैँ करी तपस्या, सात्त्विक, कहँदे उस नै ग्यान्नी॥ १७

सत्कारमानपूजार्थं, तपो दम्भेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं, राजसं चलमध्रुवम्।। १८

[१]आदर-मान, प्रसंसा, पूजा, फूल-हार ले, लोग सह्रावैँ।
इस की खात्तर, [२]ढौंग दिखावा, कर कैँ बी जो करी तपस्या।।
इत वा बोल्ली ज्याँदी राजस, [३]नस्ट होणियाँ अर नाँ निस्चित।
फळ बी उस का होवै सै यो॥ १८

मूढग्राहेणात्मनो यत्, पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा, तत् तामसमुदाहृतम्।।१९

[१]नाँ-समझी तैँ, मोह् मैँ पड़ कैँ, हठ मैँ आ [२]आप्णै तन मन नै।
दुक्ख प्हुँचा कैँ करी तपस्या, या [३]ओराँ की, हानी खात्तर।
मूठ छोडदे, जादू-टोणा, करदे माणस, वा सै तामस॥ १९

दातव्यमिति यद्दानं, दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च, तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।२०

(दान भी सै तीन तह्राँ का)

[१]'देणा सै, [२]नाँ किम्मे लेणाँ, बदलै मैँ मन्नै इस कै, न्यूँ।
सोच समझ जो दान दिया ज्या, उस नै, जिस नै देणाळै का।।
भला कर्या नाँ कद्दे होवै, [३]सही जघाँ अर [४]सही समै पै।

[५]सही मनुख नै, सुण तैँ अर्जन, सतोगुणी वो दान बताया॥ २०

यत्तु प्रत्युपकारार्थं, फलमुद्दिश्य वा पुनः।
दीयते च परिक्लिष्टं, तद्दानं राजसं स्मृतम्।। २१

[१]जो वो बदलै कर्यै होड कै, या [२]'यो काम करैगा मेरा'।
सोच समझ न्यूँ या [३]फिर कोए, उस का फळ निज मन मैँ रख।
दिया दान ज्या [४]मन नै मार्यैँ, वो दान रजोगुणियाँ बोल्ल्या॥ २१

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञातं, तत् तामसमुदाहृतम्।। २२

[१]गलत जघाँ मैँ, [२]गलत समै पै, जो दान [३]कुपात्तर नै देन्दे।
[४]कर बेइज्जत ओर [५]उपेक्सा, [६]बेरुख हो कैँ, [७]मान घटा कैँ।
वो दान तमोगुणियाँ बोल्या॥ २२

ॐ तत्सदिति निर्देशो, ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च, यज्ञाश्च विहिताः पुरा।। २३

(ब्रह्म के तीन नाम)

'ओम', 'तद्', 'सत्' ब्रह्म का न्यूँ ये, नाम बताया तीन तह्राँ का ।
ब्रह्म तत्त्व के सदा उपासक, 'ब्रह्म' बेद नै पढणै आळे।
उस के ग्याता माणस उस नै, बेद'र यग्य बणाए पहल्याँ॥ २३

तस्मादोमित्युदाहृत्य, यज्ञदानतपःक्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः, सततं ब्रह्मवादिनाम्।। २४

(ॐ का महत्त्व)

[१]इस कारण कार्य ब्रह्म की जो, उत्तम स्रिस्टी ग्यान बेद सै।
उस की बात करैँ जो कर्मी, उन की बिधि तैँ कही सभी जो।।
पूजा अर्चा ग्रन्थपाठ अर, होम दान तप सारी किरिया।
'ओम' बोल कैँ सदा चलैँ सैँ॥ २४

तदित्यनभिसंधाय, फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्च विविधाः, क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः।। २५

(तद् का मतबल)

[२]'तद्' सै 'वो' ए सार जगत् मैँ, पूज्जण जोग्गा ईस्सर वो ए।
उस नै मन मैँ कर कैँ फळ नाँ, चाह् कै माणस यग तप किरिया।
सबी तह्राँ के दान करम बी, करदे हैँ सैँ मोक्स चाण्हिये॥ २५

सद्भावे साधुभावे च, सदित्येतत् प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा, सच्छब्दः पार्थ युज्यते।। २६

('सत्' की व्युत्पत्ती)

[३]'स्+अत्=सत्' हो नित्य निरन्तर, देस काळ अर व्यस्टि पिण्ड की।
कर नाँ पह्वा ओर अपेक्षा, 'सत्', 'सै' इस बिध हो जो केवल।।
जग मैँ रहँदे पिण्डाँ मैँ वो, था बी, सै अर, होगा बी वो।
सबी जघाँ मैँ थी जो कद्दे, सैँ अर इब जो पूर्ण बिस्व मैँ।।
होँगी बी जो आणै आळै, बखताँ मैँ बण पाँच भूत तैँ।
स्रिस्टी स्थिति अर परळै म्हारी, सीमा सैँ ये भौतिक सब की।।
इन की सीमा तीन ततव सैँ, सत गुण रज गुण और तमोगुण।
जिन नै कहँदे, गिणदे-गिणदे, थक कैँ पस्त पड़े सब ग्यान्नी।।

(सत् के अरथ)

[१]इन तैँ सै पर ऊप्पर कोए, जिस नै हम सब कह नाँ पावाँ।
अनुभव मैँ पर आवै सै वो, 'सत्' हम उस नै बोल सकाँ साँ।।
[२]'आच्छी चीज रहै', या चाव्हाँ, आच्छा वो, जो सब कै हित मैँ।
हित हो आच्छे काम कर्‌यै तैँ, 'सत्' न्यूँ होणा आच्छा होणा।।
[३]आच्छा करणा बी 'सत्' होवै, पिरथा के सुत अर्जन, न्यूँ यो।
'सत्' का सबद जगत् सै बोल्लै, इन तीन तह्राँ के अर्थाँ मैँ॥ २६

यज्ञे तपसि दाने च, स्थितिः सदिति चोच्यते।
कर्म चैव तदर्थीयं, सदित्येवाभिधीयते।। २७

[४]यग, तप, दान करम मैँ निस्ठा, सर्धा, आस्था टिक कै करणा।
येँ बी 'सत्' सैँ बोल्ले जान्दे, ओर करम जो इन कै खात्तर।

होवै, वो बी सतै कुहावै॥ २७

अश्रद्धया हुतं दत्तं, तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ, न च तत् प्रेत्य नो इह।।२८।।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः।।१७।।

(असत् का अरथ अर फळ)

[१]सर्धा नाँ रख यग अर पूजा, दान दिया अर करी तपस्या।
ओर कर्‌या जो सर्धा नाँ रख, 'असत्' कुहावै वैँ सैँ सारे।।
उन का करणा करणा नाँ सै, होणा बी नाँ उन का किम्मे।
आच्छा होणा होगा कित तैँ?, [२]हित बी इन तैँ नहीँ किसै का।।
जन, धन, साधन, समै, सक्ति बी, बर्बाद सबै येँ बिरथा होँगे।
ढौँग, दिखावा, गलत राह पै, चाल्लैँ गे जो लोग देख ये।।
'असद्' बुरा के इस तैँ होगा?, यग, दान, क्रिया, तप, सर्धा बिन जो।
उन तैँ होगा बुरा सबी का, पिरथा के सुत अर्जन, नाँ ये।
मरणै पाच्छै नाँ इत जीन्दे, हितकर होवैँ, सत् होँ क्यूक्कर?॥ २८

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्स्य मैँ सत्रहमाँ अद्ध्याय पूरा होया।।१७।।

पूर्वसलोकयोग ५९४ + २८ = ६२२